हेत्वाभास (Fallacies of Inference)

हेत्वाभास दोषपूर्ण या भ्रमयुक्त हेतु को कहते हैं। शाब्दिक दृष्टि से हेत्वाभास का अर्थ होता है 'हेतु (लिंग) का आभास'। अर्थात् हेतु के न होने पर भी हेतु की तरह लगे या दिखाई दे, किंतु हेतु होता नहीं। दूसरे शब्दों में हेत्वाभास उस दोष या भ्रम को कहते हैं जो हेतु में रहता है और उसे भ्रमयुक्त या दोषयुक्त बनाता है।

इस प्रकार से 'अनुमान' को न्याय दर्शन में बहुत ही महत्वपूर्ण प्रमाण माना गया है किंतु इस प्रमाण की प्रस्तुति बहुत ही सावधानीपूर्वक करनी चाहिए अन्यथा इसके द्वारा प्राप्त हमारा ज्ञान मिथ्या हो सकता है। अतः हेत्वाभास न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण में प्रयुक्त हेतु अर्थात् चिन्ह/लिंग के गलत प्रयोग की ओर इंगित करता है।

हेत्वाभास के प्रकार :→ नैयायिकों के अनुसार हेत्वाभास 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं, जिन्हें भेद सहित निम्न तालिका द्वारा समझ सकते हैं —

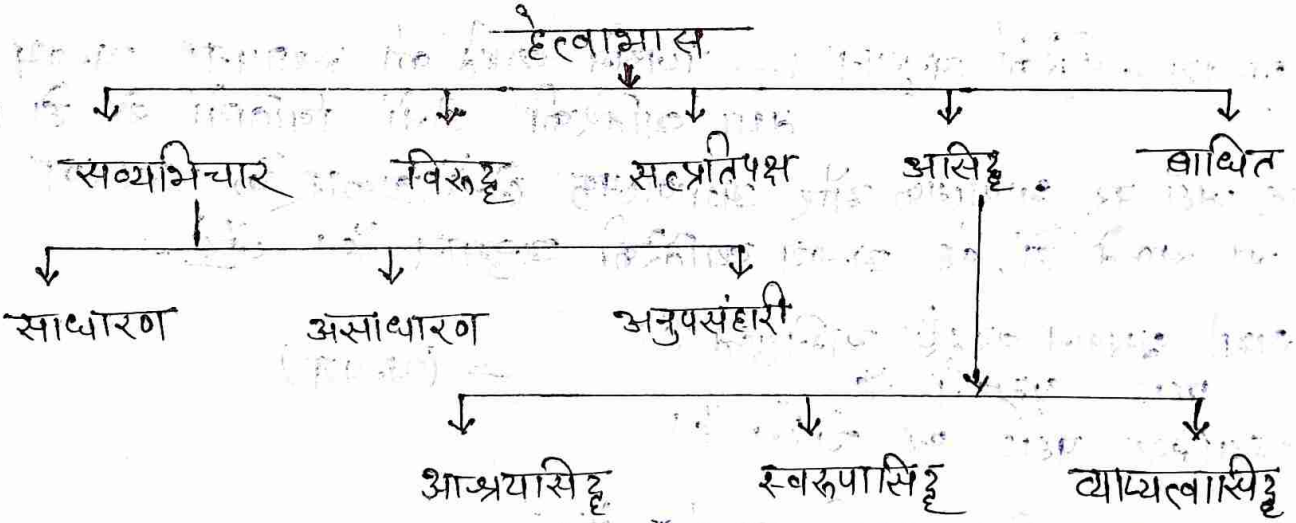

(1). सव्यभिचार → सव्यभिचार का अर्थ है 'व्यभिचारसहित'। जहाँ हेतु तथा साध्य के व्याप्ति संबंध में व्यभिचार हो, अर्थात् स्थिरता न हो। दूसरे शब्दों में व्याप्ति संबंध कभी हो और कभी न हो, वह सव्यभिचार हेतु है।

उदाहरण → 'जहाँ-जहाँ धुँआ होता है वहाँ-वहाँ आग होती है' यह तो सही हेतु है किंतु यह एक हेत्वाभास है क्योंकि हर जगह आग के साथ धुँआ नहीं होता। जैसे, लोहार के तप्त लोहे में आग होती है, पर धुँआ नहीं होता।

अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि आग के साथ कभी धुँआ होता है, कभी नहीं होता। अतः यह सव्यभिचार हेत्वाभास है।

(2). विरुद्ध → जहाँ पर हेतु से साध्य की सिद्धि न होकर असिद्धि हो उसे विरुद्ध हेत्वाभास कहते हैं।

उदाहरण. संसार नित्य है।
क्योंकि वह कार्य है।

इस अनुमान में 'कार्य' हेतु है, किंतु कार्य तो अनित्य होता है, अतः इससे संसार नित्य नहीं वरन् अनित्य सिद्ध हो रहा है।

(3). सप्रतिपक्ष → जब एक ही अनुमान के साध्य को सिद्ध करने वाले हेतु के साथ प्रतिपक्षी (विरोधी) हेतु भी उपस्थित हो, जो उस साध्य को असिद्ध करे, तो इसे सप्रतिपक्ष हेत्वाभास कहते हैं।

उदाहरण - (i) शब्द नित्य है, क्योंकि वह सब।
(ii) शब्द अनित्य है, क्योंकि वह उत्पन्न होता है।

उपर्युक्त दो अनुमानों से स्पष्ट हो रहा है कि पहले अनुमान को दूसरा अनुमान गलत सिद्ध कर रहा है।

(4). असिद्ध → कई बार हेतु ही असिद्ध होता है; जैसे कई बार हेतु तथा पक्ष में कोई संबंध नहीं होता, जबकि अनुमान के लिए ऐसा होना अनिवार्य है। ऐसी स्थिति में हेतु को असिद्ध कहते हैं।

उदाहरण - आकाश कमल सुगंधित है।
क्योंकि वह कुसुम है।
सभी कुसुम सुगंधित होते हैं।

उपरोक्त अनुमान में पक्ष 'आकाश कुसुम' है तथा हेतु 'कुसुम' है किंतु यहाँ वस्तुतः आकाश - कमल एवं सामान्य कुसुम में कोई संबंध ही नहीं है क्योंकि आकाश - कमल का अस्तित्व ही नहीं होता है; तो इस तरह के हेतु को असिद्ध हेत्वाभास कहते हैं।

(5) - बाधित → कई बार ऐसा भी होता है कि अनुमान द्वारा जिस ज्ञान की प्राप्ति हम करते हैं, उसका अन्य प्रमाण; जैसे - प्रत्यक्ष, शब्द आदि के द्वारा खण्डन हो जाता है। उदाहरण - बर्फ पानी में डूब जाता है।
क्योंकि वह एक ठोस पदार्थ है।
जितने भी ठोस पदार्थ होते हैं वे सब पानी में डूब जाते हैं, जैसे कि लोहा।

उपरोक्त अनुमान में अर्थात् 'बर्फ पानी में डूब जाती है' का प्रत्यक्ष द्वारा खण्डन होता है क्योंकि हम बर्फ को पानी में डूबते नहीं देखते हैं। यही बाधित हेत्वाभास है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि अनुमान की प्रक्रिया में हेतु का विशिष्ट स्थान है क्योंकि हम हेतु को देखकर ही व्याप्ति की मदद से साध्य को अनुमानित करते हैं। अतः हेतु में अगर कोई दोष हो तो अनुमान भी दूषित हो जाता है। इस प्रकार से इस दूषित अनुमान के दोष को हेत्वाभास कहा जाता है, जिसका पालन बहुत ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए वरना प्रमाण गलत प्राप्त होंगे अथवा सिद्ध होंगे।